शैक्षिक भ्रमण

परिवेश, प्रकृति और समुदाय से सीखने की जुगत

मोनिका भण्डारी

सीखने-सिखाने के प्रयासों में ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ने की बात अकसर होती है। बच्चों के साथ शैक्षिक भ्रमण इस उद्देश्य की दृष्टि से एक सार्थक प्रयास हो सकता है।

लेख कहता है कि कक्षा की चारदीवारी में पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया कई बार उबाऊ हो जाती है और ऐसा लगता है कि सिर्फ़ किताबी बातें बच्चों तक पहुँच रही हैं और यह सुनने-रटने जैसी प्रक्रिया हो जाती है। यदि समय-समय पर सुव्यवस्थित और सुविचारित शैक्षिक भ्रमण आयोजित कर बच्चों को परिवेशीय वस्तुओं और घटनाओं के साथ अन्त:क्रिया करने के अवसर बनाए जाएँ तो अच्छा रहेगा। इससे न सिर्फ़ सीखना-सिखाना आनन्ददायी और ताज़गीभरा होता है वरन बच्चों को परिवेशीय घटनाओं को बारीक़ी से प्रत्यक्ष देखने-समझने, उनके बारे में बातचीत करने, सवाल पूछने व समुदाय और स्थानीय वातावरण से जुड़ने आदि के अवसर बनते हैं। जिससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पुष्ट होती है।

शिक्षिका मोनिका भण्डारी ने शैक्षिक भ्रमण के अपने अनुभवों को प्रस्तुत करते हुए इसकी कार्ययोजना, तैयारी और शिक्षक की भूमिका की विस्तार से चर्चा की है। सं.

प्रस्तावना

कक्षा-कक्ष में पढ़ाए जाने वाले विषयों को यदि सम्भव हो सके तो कक्षा से बाहर ले जाकर अर्थात परिवेश से विषयवस्तु को जोड़ने की कोशिश की जाए, तो यह एक अच्छा प्रयोग हो सकता है। कक्षा में हम किसी चीज़ को सीमित रूप में समझ रहे होते हैं जबकि परिवेश में उसी चीज़ को समझने के कई रास्ते खुले होते हैं। ये अनेक रास्ते ही आनन्द के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आगे लेकर जाते हैं। कक्षाओं की चारदीवारी में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कई बार उबाऊ हो जाती है क्योंकि इसमें कई बार ऐसा महसूस होता है कि सिर्फ़ किताबी बातें ही बच्चों तक पहुँच रही हैं और यह कुछ सुनने और रटने जैसी प्रक्रिया-सी हो जाती है। बहुत से प्रकरण हमारे परिवेश से ही जुड़े होते हैं और सीखने-सिखाने की यह प्रक्रिया अपने परिवेश में जाकर बच्चों को समझ बनाने में मदद देती है। पढ़ने-लिखने और सीखने को आनन्ददायी बनाने के लिए शैक्षिक भ्रमण एक अच्छा प्रयास है। ऐसा मुझे महसूस हुआ क्योंकि मैं पूर्व में भी बच्चों के साथ ऐसा प्रयास कर चुकी हूँ और इसके परिणाम अच्छे ही रहे हैं।

शैक्षिक भ्रमण के उद्देश्य

कक्षा से बाहर जाकर शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से हम प्रकृति और मनुष्य के सह-सम्बन्धों को बेहतर तरीक़े से समझ सकते हैं। बच्चों को तो अपने परिवेश की काफ़ी सारी जानकारी होती है और उसी जानकारी को विषय व विषयवस्तु से जोड़ना और उसमें विस्तार करना शैक्षिक भ्रमण का मुख्य उद्देश्य है। इसके अलावा बच्चे अपने

परिवेश की वस्तुओं और परिवेश में घटित होने वाली घटनाओं का बारीक़ी से अवलोकन करना सीखते हैं। इन सब घटनाओं पर बच्चों को बातचीत के अवसर भी मिलते हैं। प्रकृति में कुछ चीज़ों को प्रत्यक्ष देखने पर प्रश्न पूछने, खोजने का कौशल भी बच्चों में विकसित होता है।

शैक्षिक भ्रमण की कार्य योजना

इस भ्रमण की योजना भी बच्चों से बातचीत के दौरान ही बनी। हुआ यूँ कि एक दिन मैं कक्षा 7 में पेड़-पौधों और उनके पोषण के बारे में बातचीत कर रही थी। इसी बातचीत में परजीवी पौधों का ज़िक्र आया तो 'अमर बेल' के पौधे पर बात आई। अमर बेल इस श्रेणी के पौधों का सबसे सरल उदाहरण है जो कि अकसर किताबों में दिया रहता है। अमर बेल को मैं भी कई सालों से सिर्फ़ किताब में देखती आई थी और बच्चों को पढ़ाती आई थी। यह अमर बेल किताब में एक बड़े पेड़ के इर्दगिर्द लिपटी हुई दिखाई देती है। मैं हमेशा सोचती थी कि यह हमारे आसपास नहीं पाई जाती। सच कहूँ तो इसी पूर्वाग्रह के चलते मैंने इसे अपने आसपास कभी ढूँढ़ने की कोशिश भी नहीं की।

बहरहाल मैं बात कर ही रही थी, कि एक बच्ची जिसका नाम वंदना है बोली, "मैम हमारे घर के नीचे जो खेत है वहाँ ज़मीन पर ये अमर बेल ख़ूब फैली हुई है।" मुझे लगा कि शायद ये किसी और पौधे को अमर बेल समझ बैठी है क्योंकि मेरी किताबी समझ के अनुसार तो अमर बेल सिर्फ़ बड़े पेड़ों पर ही लिपटी रहती है फिर भी मैंने वंदना और बाक़ी बच्चों से कहा कि जल्दी ही किसी दिन उसको देखने चलेंगे।

इसके अगले ही दिन मैं कक्षा 6 में गणित विषय पढ़ा रही थी कि इतने में ही वंदना और अन्य बच्चे कक्षा में आए और किसी पौधे का गुच्छा मुझे दिखाने लगे। वो सब इतने आतुर थे मुझे दिखाने के लिए कि उन्होंने अपनी कक्षा में मेरे आने का इन्तज़ार भी नहीं किया। उस गुच्छे को देखने के बाद भी मैं पूरी तरह आश्वस्त नहीं थी कि ये अमर बेल ही है; लेकिन मुझे इस बात की ख़ुशी थी कि बच्चे अपने किताबी ज्ञान को परिवेश से जोड़ रहे थे और खोजने की कोशिश कर रहे थे। किसी भी शिक्षक के लिए यह देखना और महसूस करना सुखद होता है।

अभी अमर बेल की पहचान करना बाक़ी था। इसलिए मैंने उसकी फ़ोटो खींचकर अपने व्हॉट्सएप ग्रुप में भेजी। इस ग्रुप का नाम इनोवेटिव साइंस ग्रुप है जिसमें कि हमारे अनेक शिक्षक साथी जुड़े हुए हैं। ग्रुप के अधिकांश साथियों ने इसके अमर बेल होने की पुष्टि की। इसमें एक बात और भी अच्छी हुई कि अमर बेल पर कुछ जानकार साथियों ने और अच्छी जानकारियाँ भी साझा कीं। कुछ अन्य साथियों के लिए ये मेरी ही तरह नई चीज़ थी तो इस ग्रुप में उनकी जिज्ञासाओं का भी समाधान हुआ। अब पूरी तरह से आश्वस्त होकर मुझे अपने बच्चों पर प्यार आ रहा था कि उन्होंने सीखने की प्रकिया तो जारी रखी ही थी, साथ ही वे एक अच्छे अवलोकनकर्ता भी थे।

बस यहीं से शैक्षिक भ्रमण की कार्य योजना बनी क्योंकि अब अपने बच्चों के प्रति यह मेरी ज़िम्मेदारी बनती थी कि मैं सब बच्चों को परिवेश में ले जाकर अमर बेल और अन्य पौधों से रूबरू करवाकर उनके द्वारा एकत्रित जानकारी को पुख़्ता कर सकूँ।

इसके बाद मैं अपने विद्यालय की तीनों कक्षाओं के बच्चों को गाँव में ही भ्रमण के लिए ले गई। बच्चे बहुत ख़ुश थे और मैं भी, क्योंकि मुझे भी अपने इन बच्चों से बहुत कुछ सीखने को मिल रहा था। निर्विवाद रूप से यह बात सत्य है कि बच्चे भी हमें बहुत कुछ सिखाते हैं।

भ्रमण पूर्व की तैयारी

चूँकि हमारा भ्रमण अपने स्कूल के गाँव में ही था तो इसके लिए 3 से 4 घण्टे ही पर्याप्त थे। फिर भी कुछ तैयारियाँ ज़रूरी थीं।

सबसे पहले स्कूल की प्रधानाध्यापिका से अनुमति ली गई। सभी बच्चों को निर्धारित दिन समय पर स्कूल आने को कहा गया।

बच्चों को अपने साथ एक नोटबुक और पेन लाने को कहा गया।

पानी गाँव में ही पर्याप्त था और भ्रमण ज़्यादा दूर नहीं था। इसलिए पानी ले जाने की बाध्यता नहीं थी, पर इच्छुक बच्चे पानी ले जा सकते थे।

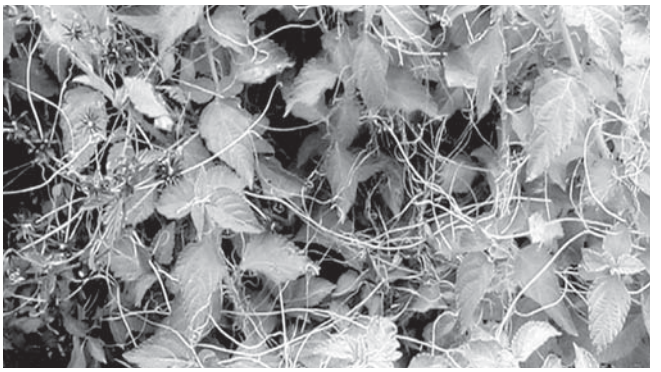

भोजन व्यवस्था स्कूल में ही थी अतः भोजन माता से बच्चों के स्कूल लौटने तक भोजन तैयार रखने के लिए कहा गया था।

इसके अतिरिक्त भ्रमण के दौरान सभी बच्चों को कुछ सावधानियाँ बरतने के लिए भी कहा गया। जैसे कि– चलते हुए बच्चे आपस में धक्का मुक्की नहीं करेंगे; सभी बच्चे साथ-साथ ही चीज़ों का अवलोकन करते हुए चलेंगे; किसी भी पेड़-पौधे या अवलोकित की जाने वाली चीज़ को नुक़सान पहुँचाने की कोशिश नहीं करेंगे; और भ्रमण के दौरान कोई भी ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे हमारे पर्यावरण को नुक़सान पहुँचता हो।

कुछ अन्य काम जिनकी ज़िम्मेदारी बच्चों को दी गई, वे इस प्रकार थे–

भ्रमण के समय अवलोकन की गई सभी चीज़ों को लिखने की ज़िम्मेदारी कक्षा 8 के बच्चों को दी गई। कक्षा 7 के बच्चों को कुछ पौधों जिनकी जड़ों का अवलोकन करना था, और अमर बेल आदि को एकत्र करने की ज़िम्मेदारी दी गई। कक्षा 7 के ही दो बच्चों को अवलोकन की जाने वाली सामग्री जैसी ज़रूरी चीज़ों की फ़ोटो खींचने का काम भी सौंपा गया। कक्षा 6 के बच्चों को अवलोकन की जाने वाली चीज़ों के चित्र बनाने के साथ ही एक दूसरे की मदद करने को भी कहा गया।

भ्रमण का प्रारम्भ

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार भ्रमण वाले दिन सभी बच्चे विद्यालय में एकत्रित हुए। चूँकि बच्चों की संख्या ज़्यादा नहीं है अतः कक्षाओं के ही तीन ग्रुप बनाए गए। विद्यालय से चलकर सबसे पहले वंदना का ही घर आता है। अतः सबसे पहले उसके घर के नीचे के ही खेत में गए। वहाँ जाकर मैं और सभी बच्चे आश्चर्य से भर गए। अमर बेल तो छोटी-छोटी वनस्पतियों से लिपटकर पूरी ज़मीन पर फैली हुई थी। और इसका आदि-अन्त कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। बच्चे पूरी तरह छानबीन कर रहे थे कि कहीं इसकी जड़ दिख जाए, पर वह दिखाई नहीं दी। बच्चों ने और मैंने आसपास के पेड़ों पर भी इसे देखने की कोशिश की, पर यह पेड़ों पर भी नहीं थी। अब इसको देखने के बाद यह पता चला कि यह परजीवी पौधा सिर्फ़ बड़े पेड़ों पर ही नहीं, बल्कि छोटी-छोटी वनस्पतियों पर लिपटकर भी अपना भोजन प्राप्त करता है। इसी बीच वंदना की मम्मी भी घर से बाहर आ चुकी थीं और वह भी बच्चों को इस तरह पेड़-पौधों का अवलोकन करते हुए देखकर ख़ुश हुईं। वो एक आशा कार्यकर्ता हैं और उन्हें अपने इसी काम के सिलसिले में ब्लॉक मुख्यालय के अस्पताल में जाना था तो उनसे बहुत ज़्यादा बातचीत तो नहीं हो पाई, लेकिन उन्होंने शैक्षिक भ्रमण के इस प्रयास की सराहना की।

अन्य स्थानीय अवलोकित की गई स्थानीय वनस्पतियों का विवरण

अमर बेल के अवलोकन के बाद उसी खेत के थोड़ा ऊपर जाकर कुछ ऐसे पौधे दिखाई दिए जिनको बच्चे अच्छी तरह से जानते-

समझते थे। जैसे–

पुदीना– यह लगभग हर घर में पाया जाता है इसलिए बच्चों को पता था कि यह मुख्यतः चटनी बनाने के काम आता है। कुछ ने कहा कि ये जूस बनाने के काम भी आता है। कोई कह रहा था कि इसकी ख़ुशबू उन्हें बहुत पसन्द है।

हल्दी– पुदीने के पास में ही हल्दी का पौधा भी था। इसे भी बच्चे बख़ूबी पहचानते थे। कई बच्चे बता रहे थे कि उनके घर में हल्दी का पौधा लगा हुआ है और हल्दी को वे मसाले के रूप में खाने में इस्तेमाल करते हैं।

इसके अलावा बच्चों ने 'अरबी (पिंडालू)', 'आम', 'अमरूद' आदि के पेड़-पौधे भी देखे।

इन पौधों को देखने के बाद हम सब आगे खेतों की तरफ़ गए। थोड़ी दूर जाकर ही देखा कि एक बड़े-से पेड़ पर एक बड़ा-सा 'छत्ता' जैसा दिखाई दिया जो कि बहुत ही सुगठित तरीक़े से बना हुआ था। हालाँकि उसमें मधुमक्खियों की कोई आवाजाही नहीं दिखाई दे रही थी। कुछ बच्चे और मैं इसे मधुमक्खी का छत्ता समझ बैठे थे, लेकिन यह शहद वाली मक्खियों का छत्ता नहीं था। बच्चों ने स्थानीय भाषा में इसका नाम 'खड़बच्चा' बताया। इसके बारे में कुछ और जानकारी चाहने के लिए एक ग्रामीण महिला से पूछा तो उन्होंने इसका एक और स्थानीय नाम 'अडगाल' बताया। उन्होंने बताया कि ये लाल-पीले रंग की मक्खियाँ होती हैं जो शहद नहीं बनातीं। उन्होंने यह भी बताया कि छेड़ने पर ये बहुत ज़ोर से काटती हैं।

इस बीच बच्चे अपनी अवलोकित चीज़ों को अपनी नोटबुक में भी दर्ज कर रहे थे। इसके आगे चलते रहने पर बच्चों ने 'भीमल', 'गुरियाल', 'अखरोट', 'चुल्लू' आदि के पेड़ भी देखे। आगे नहर से होकर सब बच्चे चलते जा रहे थे और बता रहे थे कि किस तरह गाँव में नहर से सिंचाई होती है। बच्चों ने बताया कि जब वे लोग खेतों में 'छेमी', 'आलू' और अन्य सब्ज़ी आदि लगाते हैं तो बारी-बारी से गाँव का हर परिवार सिंचाई करता है। और कभी-कभी आधी रात को भी उनकी सिंचाई की बारी आती है। ऐसे में उनके घर के बड़े सदस्य ही सिंचाई के लिए जाते हैं। बारी-बारी से सिंचाई करने को यहाँ की स्थानीय भाषा में 'पांतू' बोलते हैं।

नहर से होकर हम सब जलस्रोत पर पहुँचे। वहाँ पर गाँव की कुछ महिलाएँ कपड़े धो रही थीं। बच्चों से उन्होंने कुछ बातचीत की और मुझसे भी पूछा कि आज बच्चों को कहाँ लेकर जा रही हो? मैंने उन्हें अपना उद्देश्य बताया तो बोलने लगीं कि अब स्कूल में ऐसा भी होने लगा है! उन्हें शायद आश्चर्य हो रहा था कि घूमने में भला कैसी पढ़ाई? वे सब थोड़ा मुस्कराईं और अपने काम पर लग गईं।

बहरहाल बच्चों को अब प्यास लग आई थी। सब बच्चों ने जलस्रोत का ठण्डा पानी पिया और प्यास बुझाई। ये जलस्रोत आज भी गाँवों की 'जीवन रेखा' है। घर-घर में आने वाला पानी कभी-कभी बारिश या अन्य कारणों से पाइपलाइन के क्षतिग्रस्त होने के कारण बन्द भी हो जाता है लेकिन इस जलस्रोत का पानी कभी बन्द नहीं होता। ये सब बातें बच्चे ही मेरे पूछने पर मुझे बताते जा रहे थे।

जलस्रोत से थोड़ी ही दूरी पर एक तालाब था जिसमें उनके पशुओं जैसे– भैंस आदि को नहलाया जाता था। तालाब का पानी काफ़ी गन्दा और कीचड़युक्त था। जब मैंने उन्हें पूछा कि इस तालाब में तुम्हें क्या-क्या दिखाई देता है तो उन्होंने बताया कि 'मेंढक', 'पनियारी', और कुछ छोटी पूँछ वाले छोटे जीव भी। छोटी पूँछ वाले शायद 'टैडपोल' हो सकते थे। इसपर भी थोड़ी बातचीत हुई और मैंने उन्हें बताया कि टैडपोल मेंढक के वयस्क जीवन की पूर्व अवस्था है। इसके अतिरिक्त मैंने उन्हें ये भी बताया कि इस तालाब के पानी में अनेक सूक्ष्मजीव भी हो सकते हैं जिन्हें हम सामान्य आँखों से नहीं देख पाते और इसके लिए हमें सूक्ष्मदर्शी की ज़रूरत पड़ती है।

तालाब के पास ही बड़ा-सा टैंक था। उसमें पानी तो नहीं था पर काफ़ी मात्रा में 'शैवाल

(काई)' जमा हुआ था। उसे भी बच्चों ने देखा और बताया कि इसे हमने अपने घरों में पानी वाली जगहों पर भी देखा है। शैवाल को देखकर बच्चों के मन में सवाल उठना स्वाभाविक ही था। और मैं चाह भी रही थी कि बच्चे अपनी जिज्ञासा को न दबाएँ और बेझिझक सवाल पूछें। मैंने उनसे कहा कि अपने मन में उठने वाले प्रश्नों को ज़रूर पूछें।

बच्चों ने प्रश्न करना शुरू किया

प्रश्न – ये नल के पास या ज़्यादा बारिश वाली जगहों पर ही क्यों दिखाई देते हैं?

मैंने उन्हें बताया कि ये पौधे नमी वाले स्थानों पर ही पाए जाते हैं। जहाँ पर भी पानी लगातार गिरता हो या पानी जमा रहता हो, वहाँ पर ये अकसर पाए जाते हैं।

प्रश्न – क्या ये भी अमर बेल की तरह किसी और पौधे से भोजन लेते हैं?

उत्तर – नहीं।

फिर मैंने ही उनसे प्रश्न किया कि क्या ये अमर बेल की तरह किसी अन्य पौधे से लिपटे हुए दिखाई दे रहे हैं? उत्तर नहीं में मिला।

प्रश्न – तो ये खाना कहाँ से खाते हैं?

उत्तर – मैंने उन्हें बताया कि ये जीव स्वपोषी हैं। ये अपना भोजन स्वयं बनाते हैं।

प्रश्न – क्या ये प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया करते हैं?

उत्तर – हाँ, बिलकुल करते हैं।

प्रश्न – ये तो बहुत छोटे हैं। इनकी पत्तियाँ भी अलग से नज़र नहीं आ रही हैं?

उत्तर – इनमें पौधों के समान जड़, पत्तियाँ आदि अलग-अलग नहीं पाए जाते हैं। ये एककोशिकीय या बहुकोशिकीय हो सकते हैं।

अब बच्चे आपस में ही इसपर बातचीत करने लगे थे।

यहाँ से होते हुए हम कुछ खेतों को पार करते हुए आगे बढ़े। खेतों से चलते हुए मैं कुछ 'घास' और एक दो 'दाल' के पौधे जड़सहित उखाड़कर साथ में ले आई थी। इनको साथ में लेकर हम गाँव के एक मन्दिर में पहुँचे। सभी बच्चे थोड़ा थक भी गए थे तो मन्दिर में ही सब इकट्ठे हो गए और बैठकर आराम करने लगे। मन्दिर में पहुँचकर मुझे एक पुराना छात्र दीपक मिल गया। सब बच्चे उसके साथ बातें करने लगे। वो हम सबको देखकर बहुत ख़ुश हुआ। दीपक दरअसल एक दिव्यांग बच्चा है। वह चलने-फिरने में असमर्थ है। वह घिसट-घिसट कर ही चलता है। स्कूल भी वह ऐसे ही आया करता था। उसके हाथ-पैर इसी वजह से चोटिल रहते हैं। पर आज ख़ूब सारे बच्चों को देखकर वह ख़ूब ख़ुश हुआ और बातचीत करने लगा। दीपक को देखकर मन में उसके लिए कुछ न कर पाने का अफ़सोस पहले भी होता था और आज भी हुआ। वह शारीरिक रूप से असमर्थ होने के साथ-साथ मानसिक रूप से भी कमज़ोर है। स्कूल में पढ़ने के दौरान उसे विभाग से वित्तीय सहायता मिल जाया करती थी। अब वह काफ़ी बड़ा हो चुका है लेकिन चल-फिर न पाने के कारण अधिकतर मन्दिर में बैठा रहता है।

मन्दिर के सामने एक दुकान है जो कि बन्द है। खुली होने पर बच्चे उसका भी अवलोकन कर पाते, लेकिन यह सम्भव नहीं हो पाया।

बहरहाल जो पौधे मैं उखाड़कर लाई थी, मैंने बच्चों से उनकी जड़ों का अवलोकन करने को कहा। दोनों पौधों की अलग-अलग जड़ें थीं। बच्चे उन जड़ों के बारे में जानना चाह रहे थे कि ये अलग-अलग क्यों हैं? बच्चे फिर प्रश्न करने लगे थे कि एक जड़ पूरी तरह गुच्छे के रूप में है और दूसरी में एक बीच में लम्बी-सी जड़ है और इसी से बहुत सारी छोटी-छोटी शाखाएँ जैसी निकल रही हैं। क्या और तरह की जड़ें भी पेड़-पौधों में पाई जाती हैं? उनकी जानकारी के लिए मैंने उन्हें बताया कि मुख्य रूप से जड़ें दो प्रकार की होती हैं– पहली, 'झकड़ा जड़' (fibrous root)- ये जड़ें गुच्छों के रूप में उत्पन्न होती हैं और सभी जड़ें लगभग एक ही आकार व मोटाई की होती हैं। ये जड़ें ज़मीन के बहुत नीचे तक नहीं जाती हैं। जैसे– घास, गेहूँ, चावल, मक्का, आदि; और दूसरी, 'मूसला जड़' (tap root)- इसमें एक मुख्य जड़ होती है और इसी से बहुत सारी अन्य सहायक जड़ें निकली रहती हैं। ये गुच्छों के रूप में नहीं होती हैं और ज़मीन में बहुत गहरे तक जाती हैं। जैसे– गाजर, चुकन्दर, दाल आदि।

इन जड़ों का अवलोकन करने के बाद और दीपक से विदा लेकर हम गाँव की तरफ़ नीचे की ओर चले। रास्ते में 'पंचायत भवन' आया। मैं वहाँ भी बच्चों को लेकर गई। पंचायत भवन के गाँव में महत्त्व के बारे में मैंने बच्चों से बातचीत की। बच्चों ने बताया कि गाँव में जो बैठकें होती हैं और घर-गाँव के छोटे-छोटे मांगलिक कार्य जैसे– शादी आदि होते हैं वे सब यहाँ किए जाते हैं। सब तो नहीं, पर छोटे-छोटे कामों के लिए पंचायत भवन उपयोग में लाया जाता है। बच्चों ने बताया कि जब दीपक का मकान बारिश से टूट गया था तो उनका परिवार यहीं आकर रहा था कुछ समय के लिए। इन सब बातों से निष्कर्ष निकला कि गाँव में कुछ ऐसे स्थान होते हैं जो सबके लिए बराबर रूप से काम आते हैं। ये स्थान 'सामूहिकता' को भी बढ़ावा देते हैं और आपस में प्रेम और मदद करने जैसी बातों को भी बढ़ावा देते हैं। पंचायत भवन में कुछ कबूतरों ने अपना 'घोंसला' बना रखा था। बच्चे घोंसला और अण्डे देखकर ख़ूब ख़ुश हुए।

अब हम वापसी की ओर थे। स्कूल की तरफ़ एक घर के पास हम सब रुक गए। वहाँ पर एक 'कपास' का पेड़ था। इसे देखकर सबसे ज़्यादा ख़ुशी मुझे ही हुई, क्योंकि मुझे अपनी तीनों कक्षाओं में 'कपास से रेशों' तक वाले टॉपिक पढ़ाने थे। अतः मुझे साक्षात टीएलएम मिल गया था जो कि इन टॉपिकों को शुरू करने में मेरा मददगार होने वाला था। कपास के पेड़ पर कुछ कलियाँ खिल रही थीं और कुछ तो पूरी तरह हँसते हुए कपास को बाहर झाँकने का मौक़ा दे रही थीं। इस पेड़ के बारे में बातें करते हुए हम आगे की ओर बढ़े। और बच्चों ने कहा कि जब हम इस टॉपिक को पढ़ रहे होंगे तो कुछ कपास अपने साथ लेकर आएँगे।

इन बातों को करते-करते हम स्कूल की ओर बढ़ रहे थे। थोड़ी ही देर में सब बच्चे अपने स्कूल पहुँच गए। सबको भूख भी लग आई थी। अन्य शिक्षिकाएँ और भोजन माता प्रतीक्षा कर रही थीं। बच्चे आपस में अपनी

इस छोटी-सी यात्रा की बातों में मशग़ूल थे। फिर सबने हाथ-मुँह धोकर गरमागरम खाने का आनन्द लिया।

इसके बाद बच्चों को अपनी इस छोटी-सी यात्रा का लेखा-जोखा लिखने को मैंने कहा तो वे घर से लिखकर लाने को सहर्ष तैयार थे। स्कूल समयावधि समाप्ति पर सब बच्चे अपने-अपने घरों को चले गए। और मैं सोच रही थी कि यह भ्रमण बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में मददगार होगा या नहीं?

अन्त में

मुझे लगता है कि इस तरह के छोटे-छोटे शैक्षिक भ्रमण हमें कुछ-न-कुछ ज़रूर सिखाते हैं। सिर्फ़ बच्चे ही नहीं, हम भी बहुत कुछ सीख रहे होते हैं। बच्चे भी हमें बहुत कुछ सिखा जाते हैं। और ये धरती तो अपने अन्दर कितनी ही चीज़ों को समाए हुए हैं। उसमें से हम थोड़ा भी समझ पाए तो हमारे लिए ही उपयोगी रहेगा। बच्चे भी बाहर जाकर ख़ुश होते हैं और रुचि लेते हैं। ज़रूरी नहीं कि भ्रमण हेतु अधिक दूर ही जाया जाए। हम अपने आसपास भी बच्चों को लेकर जा सकते हैं। इस तरह के शैक्षिक भ्रमण बच्चों में अवलोकन क्षमता को बढ़ाते हैं और अपने परिवेश व पर्यावरण के प्रति बच्चे जागरूक और संवेदनशील बनते हैं। बच्चे ख़ुद से चीज़ों को समझने और खोजने का प्रयत्न करते हैं। कुछ प्रश्न पूछने की क्षमता का भी विकास होता है। शैक्षिक भ्रमण समय-समय पर विद्यालय में किए जाने चाहिए क्योंकि ये बच्चों को प्रकृति से जुड़ने के अवसर देते हैं।

बच्चों की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी लेते हुए और छोटी-छोटी सावधानियों जैसे– पर्यावरण को नुक़सान न पहुँचाना, आपस में सहयोग करना आदि को ध्यान में रखते हुए विद्यालयों में समय-समय पर शैक्षिक भ्रमण की कार्य योजना ज़रूर बनाई जानी चाहिए।

व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए यह भ्रमण कुछ नई जानकारी देने वाला हुआ। पूर्व में जिन चीज़ों का पता नहीं था उनकी जानकारी हुई। बच्चों के साथ-साथ मुझे भी सीखने को मिला।

आज का दिन मुझे काफ़ी अच्छा और सार्थक लगा एवं साथ ही सन्तुष्टि हुई कि बच्चों को अपने परिवेश से जुड़ने और सीखने-समझने का अवसर दे पाई।

मोनिका भण्डारी राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय बल्डोगी, विकासखण्ड चिन्यालीसौड़, जनपद उत्तरकाशी में सहायक अध्यापिका हैं। उन्हें प्राथमिक शिक्षा में कार्य करने का सोलह साल का अनुभव है। उन्हें कविताएँ और डायरी लिखना व विविध साहित्य पढ़ना अच्छा लगता है।

सम्पर्क : monikaamod6006@gmail.com